

श्री शान्तिनाथ पूजन

(डॉ. अखिल बंसल कृत)

(दोहा)

गुण अनन्त की खान हो, धीर वीर गम्भीर।
जो भी आवे शरण में, मिट जावे भवपीर॥
'अखिल' विजेता विश्व के, तुम प्रभु महिमावान।
मैं पूजूं नित भाव से, शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अत्र तिष्ठ तिष्ठः ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

नित रंग-राग में फंसा रहा, जीवन का पल-पल खोया है।
राग-द्वेष मोहादि के वश, मैंने कांटो को बोया है॥
अब शुभभाव जगा मन में, जल से भर गगरी लाया हूँ।
मिथ्यामल धोने हेतु प्रभु, मैं शरण आपकी आया हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मम अंतस शीतल करने को विधियाँ अनेक रच डाली हैं।
सुख शान्ति तनिक भी नहीं मिली, हर रात अमावस काली है॥
क्रोधादि कषायें क्षय करने, शीतल चन्दन में लाता हूँ।
अब तो नहीं पल भर देरी हो, नित गीत तुम्हारे गाता हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरे सदृश बन जाने की, मन में इच्छा बलशाली है।
यह भवसागर प्रभु पार करूँ, चैतन्य शक्ति मतवाली है॥
अक्षय निधि की प्राप्ति हेतु, मैं अक्षत भेंट चढ़ाता हूँ।
हो मुक्तिरमा सहचर मेरी, प्रभु यही भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कामाग्नि प्रबल दुखदायी है, कैसे छुटकारा मैं पाऊँ।
विषयों से मुझको मुक्ति मिले, दिन-रात भावना मैं भाऊँ॥
ले पुष्प सुगन्धित थाल सजा, जो काम प्रतीक कहाता है।
चरणों में अर्पित है स्वामी, अब और नहीं कुछ भाता है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

जब क्षुधा व्याधि से ग्रसित हुआ, ना-ना व्यंजन बनवाता हूँ।
तन हृष्ट-पुष्ट जब हो जाता, मैं फूला नहीं समाता हूँ॥
मुझमें आतम बल जागृत हो, दिल में ऐसा विश्वास भरे।
नैवेद्य समर्पित करता हूँ, मम क्षुधा रोग का नाश करे॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोहान्ध चक्र के बीच फंसा, पापों ने आकर घेरा है।
थी दर्शन ज्ञान शक्ति मेरी, उसने अपना मुँह फेरा है॥
अज्ञान तिमिर का क्षय करने, दीपक ले पूजन को आया।
जीवन प्रकाश से आल्हादित ऐसा अनुपम रस मैं पाया॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ये कर्म बंध दुखदायी हैं, इनको न पृथक् कर पाया हूँ।
सब अष्ट कर्म विध्वंस करूँ, दस धूप सुगन्धित लाया हूँ॥
हर्षित हूँ चित्त प्रफुल्लित है, अविनश्वर सुख अब मिल जाए।
यह पावन धूप समर्पित है, नितप्रति नभ मण्डल महकाए॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

नाना प्रकार के फल लेकर, प्रभु पूजन करने मैं आया।
शिवपुर मेरा निजवास बने, यह सोच-सोच मन हर्षाया॥
भव भ्रमण हमारा मिट जाए, दुनिया से मन घबराया है।
सन्मार्ग मिले पथ निष्कण्टक, मन सोच-सोच हर्षाया है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम तो अनर्घ्य पद पाने को, प्रभु शरण आपकी आए हैं।
यह अर्घ्य समर्पण करने को, जल से फल तक सब लाए हैं।
प्रभु अष्टद्रव्य का थाल सजा, पूजन करने मैं आया हूँ।
चरणों में अर्घ्य चढ़ा करके, भव सागर तरने आया हूँ।
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक का अर्घ्य

(सखी छन्द)

भादों कृष्ण सप्तम आयो, गरभागम मंगल पायौ।
ऐरा माता उर आए, सब जगत तुम्हें सिर नायै॥
ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्णासप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं।
कलि चौदस ज्येष्ठ की जानो, जन्में श्री शान्ति महानो।
हस्तिनापुर खुशियां छाई, हम पूजत हैं चितलाई॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं।
तिथि चौदस ज्येष्ठ की श्यामा, धरियो तप श्री अभिरामा।
हस्तिनापुर खुशियां छाई, हम पूजत हैं चितलाई॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां निष्क्रमेणमहोत्सवमंडिताय श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं।
पौष शुक्ल दशमी दिन सोहै, लहि केवल आतम जो है।
चहुँदिशि हर्षित है स्वामी, नित बन्दों त्रिभुवन नामी॥
ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं।
जेठ कृष्णा की चौदस आई, शिखर सम्मेद में मुक्ति पाई।
सादि अनन्त सिद्ध पद पाया, सब मोक्ष कल्याण मनाया॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं।

जयमाला

जय शान्ति प्रदाता जगत भूप, हो धर्मध्यान आनन्द रूप।
हस्तिनापुर के तुम हृदयहार, नित ही करते निज में विहार॥
जय ऐरा माता गोद पाय, बहुविध क्रीड़ा कीनी जिनाय।
तुम पर गहरी श्रद्धा मुनिन्द्र, जय शान्ति जिनेश्वर जय जिनेन्द्र॥

प्रभु कामदेव सुन्दर स्वरूप, तुम हो अखण्ड चैतन्य रूप।
 नृप विश्वसेन के तुम हो लाल, निर्द्वन्द्व निराकुल तुम विशाल॥
 संसार भ्रमण से जग निराश, मनवांछित फल की करें आस।
 नित नई लालसायें मुनिन्द्र, जय शान्ति जिनेश्वर जय जिनेन्द्र॥
 शुभ-अशुभ राग हैं दुःखस्वरूप, जग ने माना आनन्द रूप।
 पर के तुम कर्ता नहीं नाथ, सबके ज्ञाता हो एक साथ॥
 प्रभु के स्वरूप को निरख आज, मिल गया मुझे सम्पूर्ण काज।
 हम तो शरणागत हैं मुनिन्द्र, जय शान्ति जिनेश्वर जय जिनेन्द्र॥
 मेरा स्वभाव है ज्ञानमयी, यह भेद जान हर्षित हैं सभी।
 रागादि विभाव किए जितने, आकुलित हुए सब ही उतने॥
 तुमरी महिमा तो है अपार, भवदधि से सबको करो पार।
 वातायन सुरभित है मुनिन्द्र, जय शान्ति जिनेश्वर जय जिनेन्द्र॥
 प्रभु चरणों में श्रद्धा अगाध, मेरी अन्तिम है यही साध।
 निरखत मुद्रा नयनाभिराम, कर जोड़ करत शत् शत् प्रणाम॥
 प्रमुदित है जनगण मन अपार, जिनबिम्ब विलोकत बार-बार।
 तुम 'अखिल' विश्व के हो मुनिन्द्र, जय शान्ति जिनेश्वर जयजिनेन्द्र॥

शान्तिदूत प्रभु जगत के, महिमा अपरम्पार।

मैं वन्दूँ नित भाव से, होय जगत उद्धार॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(इति पुष्पांजलि क्षिपेत)

आज हम जिनराज तुम्हारे द्वारे आये।

हाँ जी हाँ हम आये आये ॥टेक॥

देखे देव जगत के सारे, एक नहीं मन भाये।

पुण्य-उदय से आज तिहारे, दर्शन कर सुख पाये ॥1॥

जन्म-मरण नित करते-करते, काल अनन्त गमाये।

अब तो स्वामी जन्म-मरण का, दुखड़ा सहा न जाये ॥2॥

भव-सागर में नाव हमारी, कब से गोता खाये।

तुम ही स्वामी हाथ बढ़ाकर, तारो तो तिर जाये ॥3॥

अनुकम्पा हो जाय आपकी, आकुलता मिट जाये।

'पंकज' की प्रभु यही बीनती, चरण-शरण मिल जाये ॥4॥